सीखना हमेशा वर्तमान में होने वाली क्रिया है

ज्ञान के संचय से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है सीखना। सीखना एक कला है। एक इलेक्ट्रानिक मस्तिष्क में, यानी कम्प्यूटर में, जानकारियां भरी जा सकती हैं और फिर उसके बदले हर प्रकार की सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं। लेकिन ये मशीनें चाहे जितनी चतुर हों, इनमें चाहे जितनी जानकारियां भर दी गई हों, पर ये सीख नहीं सकतीं। यह केवल मनुष्य का मन है जो सीख सकता है। सीखने की क्रिया और ज्ञान की प्रक्रिया में काफी अन्तर है। ज्ञान की प्रक्रिया कुछ ऐसी है जिसमें अनुभवों, तरह-तरह के सामाजिक दबावों, प्रभावों आदि का संचय होता है। यह संचय ज्ञान के रूप में अपना अवशेष छोड़ता है और उस ज्ञान और पृष्ठभूमि से हम क्रियाशील होते हैं। अगर ऐसा न हो, यानी सदियों से इकट्ठा किया हुआ ज्ञान न हो, तकनीकी जानकारियां न हों तो हम शायद कुछ काम ही नहीं कर पाएंगे, हमें यही नहीं पता चलेगा कि हम कहां रहते हैं। और हमें क्या करना है। दूसरी तरफ सीखने की क्रिया एक निरन्तर गति है। जिस क्षण आपको लगता है कि आपने सीख लिया है तब तक वह ज्ञान का रूप ले लेता है और उस ज्ञान से आप क्रिया करते हैं। तब आप वर्तमान में रहते हुए अतीत के माध्यम से कार्य करते हैं।

सीखने का अर्थ है बिना अतीत के मुताबिक हुए वर्तमान में क्रियाशील होना। मुझे लगता है कि हमें इसको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, नहीं तो यह हमें तमाम तरह की भ्रान्तियों की तरफ ले जाएगा उस वक्त जबकि वक्ता कुछ बड़े मुद्दों को उठाना चाहेगा। क्योंकि जब आप ज्ञान के साथ सुनते हैं। तो सीखना नहीं होता। अगर आप ज्ञान के साथ, अपने सीखे हुए के साथ सुनते हैं तो आप वास्तव में सुनते ही नहीं, तब आप व्याख्या, तुलना, मूल्यांकन और निर्णय कर रहे होते हैं, आप किसी स्थापित ढांचे के अनुरूप हो रहे होते हैं। सुनने की क्रिया एक बिल्कुल अलग चीज़ है; जब आप पूर्ण ध्यान के साथ बिना तुलना, मूल्यांकन, व्याख्या और अनुरूपण के सुनते हैं तो केवल तभी आप वास्तव में सुन रहे होते हैं।

आप उन कौओं को सुन रहे हैं? ये बहुत शोर मचा रहे हैं, इनका यह आराम का समय है। अगर आप इस शोरगुल को रोकने की कोशिश करते हैं, अगर आप में इसको लेकर चिढ़चिढ़ाहट होती है क्योंकि आप वक्ता को सुनना चाहते हैं, तब आप पूर्ण ध्यान के साथ मौजूद नहीं होते, आपका मन बंटा होता है। इसलिए सुनने की क्रिया ही सीखने की क्रिया है।

जीवन के बारे में हमें कितना कुछ सीखना है, क्योंकि जीवन सम्बन्धों का प्रवाह है। और वह सम्बन्ध ही क्रिया हैं। हमें सीखना है, न कि जीवन रूपी उस गति से ज्ञान संचित करना है और उस ज्ञान के मुताबिक जीना है। किसी के मुताबिक होने का मतलब है एक सांचे में खुद को ढाल लेना, समाज के प्रभावों, दबावों और मांगों के अनुसार खुद को कर लेना। जीवन का अर्थ है जीना और उसे गहराई से समझना। जीवन के बारे में हमारा सीखना तब बंद हो जाता है जब हम जीवन के पास अतीत के साथ, ज्ञान रूपी संस्कारबद्धता के साथ जाते हैं और उससे तर्क-वितर्क करते हैं।

तो ज्ञान अर्जित करना और सीखने में अन्तर है। आपके पास ज्ञान तो होना चाहिए, अन्यथा आपको पता ही नहीं चलेगा कि आप कहां रहते हैं, आपका नाम क्या है, आदि। तो एक स्तर पर ज्ञान बहुत आवश्यक है, लेकिन उस ज्ञान का इस्तेमाल आप जीवन को समझने के लिए नहीं कर सकते, क्योंकि जीवन एक जीती-जागती, हर क्षण बदलती गति है। और जब आप जीवन के साथ नहीं चलते तब आप अतीत में चले जाते हैं और जीवन रूपी अद्भुत चीज़ को समझने की कोशिश करते हैं। लेकिन जीवन को समझने के लिए तो उसके हर क्षण के बारे में सीखना पड़ेगा और यह कहते हुए उसके पास कभी नहीं जाना होगा कि मैं इसके बारे में पहले से ही जानता हूं।

'कलेक्टेड वर्क्स' खंड १५ मद्रास, २३ दिसम्बर १९६४